जनवरी-मार्च 2022

वर्ष 01, अंक 01

# दक्षिणापथ पत्रिका

प्रवेशांक

पूर्व-समीक्षित त्रैमासिक

**प्रधान संपादक**

**प्रो. गणेश बी. पवार**

**संपादक**

**डॉ. हसन पठान**

# अनुक्रम


**अपनी बात** 5

**कविताएँ**

आस्था तिवारी की तीन कविताएँ 7

ईशीता वर्मा की तीन कविताएँ 11

संजना. एस की दो कविताएँ 14

**कहानियाँ**

श्मशानी सोना–अण्णा भाऊ साठे (मराठी) - अनु. मोबिन जहोरोद्दीन 17

चाहत– श्रीराम शर्मा (तेलुगु) - अनु. डॉ. निर्मला देवी चिट्टिल्ला 25

**आलेख**

मराठी साहित्य के वरिष्ठ लेखक : लोक शायर अण्णा भाऊ साठे - सोनकांबळे पिराजी मनोहर 35

भारतीय जनमानस में बचपन : प्रेमचंद की कहानियों के सन्दर्भ में - अभिषेक रंजन 47

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में सामाजिक मूल्य - डॉ. श्रीमाती राजु एस. बागलकोट 52

हाशियेकृत किन्नर समाज एवं 'तीसरी ताली' उपन्यास - दिलना के 56

लोक साहित्य और मुस्लिम धर्म - मेहराजबेगम ह. सैय्यद 64

दक्षिण भारत में अनुवाद और रोजगार के अवसर - डॉ. नितिन पाटिल 70

'क्याप' उपन्यास में राजनैतिक क्रांति का समाजशास्त्रीय अध्ययन - गंगुला ज्वाज़ल्या 76

संत नामदेव का व्यक्तित्व एक परिचय - डॉ. अप्पासाहेब गोरक्ष जगदाले 81

**विविध : यात्रा वृतांत**

एक लापता देश– पु.ल.देशपांडे (मराठी) - अनु. हसन पठान 87

# संत नामदेव का व्यक्तित्व एक परिचय

- डॉ.अप्पासाहेब गोरक्ष जगदाले

संत नामदेव का मराठी संत साहित्य व हिन्दी संत साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म महाराष्ट्र के सातारा जिले के 'नरसी' नामक गांव में संवत् (1192) को हुआ था तथा मृत्यु पंढरपुर में संवत्(1272 ) को हुई। संत नामदेव के माता–पिता का नाम गोणाई व दामाशेट थे। संत नामदेव की पत्नी का नाम राजाई था। उनके चार पुत्रों के नाम है –नारायण, महादेव, गोविंद, विट्ठल और पुत्री लिम्बाबाई थीं। संत नामदेव बहुप्रतिभा के धनी थे। संत नामदेव का व्यक्तित्व उनके समकालीन संतों के साथ कुछ अधिक ही मुखरित होता है। संत नामदेवकालीन संतों में ज्ञानदेव, निवृत्ति, सोपान, चोखामेला, विसोबा खेचर बंका, गोरा कुंभार, सॉवता माली, नरहरी सोनार, महिला संत कवियों में जनाबाई, कान्होंपात्रा, सोयराबाई, निर्मला आदि का योगदान संत नामदेव के व्यक्तित्व को महत्ता प्रतिपादित करता है।

संत नामदेव का व्यक्तित्व प्रतिष्ठित होने के पीछे दो कारण है–एक उनके समकालीन संत है तथा दूसरा महाराष्ट्र से होकर उत्तर भारत की यात्राएं करने से एक चेतना विकसति हुई। संत नामदेव केा गुरुत्व का प्रसाद विसोबा खेचर से प्राप्त हुआ। जिससे संत नामदेव का मंडल महाराष्ट्र और पंजाब में शिष्यों में संत जनाई, चोखोबा तथा बहोरदास, विष्णुस्वामी, जाल्हों, लद्धा, केसो आदि का नाम उल्लेखनीय है। संत नामदेव के व्यक्तित्व विकास में 'विट्ठल' एक विस्तृत कुटुंब के कर्ता पुरुषों के समान मराठी संत साहित्य में परिवारीक कार्य करता दिखाई देता है। 'विट्ठल' संत गोराबा कुंभार के साथ मिट्टी रौद रहे हैं तथा संत चोखामेला के साथ प़शु को ढोते हैं।

चोखाबाची भक्ति कैसी। प्रेम आवडी देवासी।।
ढोरे ओढी त्याचे घरी। नीच काम सर्व करी।।1

संत नामदेव के पद जनता– जनार्दन के मुख की बाणी बन गई। संत नामदेव के व्यक्तित्व के संदर्भ में संत ज्ञानेश्वर कहते हैं–

ज्ञानदेव म्हणे तू भक्त शिरोमणि । जोडिले जन्मोनि केशव चरण।
प्रेमसुख गोडी तुमची पावली। वासना गावली समूल तुझे ।2